tis question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

No. of Question Paper : 6095 **G**

que Paper Code : 205202

e of the Paper : Hindi Paper - V

(Uttarmadhyakalin Kavita)

me of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

mester : II

ration : 3 Hours Maximum Marks : 75

त्रों के लिए निर्देश

इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

सभी प्रश्न अनिवार्य है।

"भाव और शिल्प" की दृष्टि से रहीम के काव्य की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

देव के सौन्दर्य-वर्णन पर प्रकाश डालिए।

बिहारी की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए। (15)

अथवा

रीतिकालीन वीर काव्य परंपरा में भूषण का स्थान निर्धारित कीजिए।

P.T.O.

3. घनानंद की 'प्रेम-व्यंजना' पर प्रकाश डालिए।

अथवा

गिरिधर के काव्य में वर्णित नैतिक आदर्शों की विवेचना कीजिए।

4. किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:

(क) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।

टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।

रहिमन प्रीति न कीजिए, जस खीरा ने कीन।

ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँकें तीन।।

(ख) पावक मैंबसि आँच लगै न, बिना छत खाँड़े कि धार पै धावै,

मीत सों भीत, अभीत अमीत सों, दुक्ख सुखी, सुख मैं दुःख

जोगी है आठ हु जाम जगै, अठजामनि कामनि सौं मनु लावे।

आगिलो पाछिलों सोचि सबै फल कृत्य करै, तब भृत्य कहावै।।

(ग) साजि चतुरंग-सैन अंग मैं उमंग धारि

सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।

भूषन भनत नाद-बिहंद नगारन के

नदीनद मद गैबरन के रलत है।

ऐलफैल खैलभैल खलक में गैलगैल

गजन की ठैलपैल सैल उसलत है।

तारा सो तरनि धूरिधारा में लगत जिमि

थारा पर पारा पारावारा यों हालत है।

दिए गए निर्देशों के आधार पर किन्हीं दो का रचना-कौशल (लगभग 150 शब्दों में) स्पष्ट कीजिए : (7+7)

(क) **निर्देश : भाषा-सौन्दर्य**

दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित प्रीति।

परति गाँठि दुरजन-हियैं, दइ, नई यह रीति।।

(ख) **निर्देश : प्रकृति-सौन्दर्य**

बंदनवार बँधै सब कैं, सब फूल की मालन छाजि रहे हैं।

मैनका गाइ रहीं सब कैं, सुर-संकुल है सब राजि रहे हैं।।

फूल सब बरसैं 'द्विजदेव', सबै सुखसाज कौं साजि रहे हैं।

P.T.O.

यौं ऋतुराज के आगम मैं, अमरावती कौं तरु लाजि रहे

(ग) **निर्देश : भाव-सौंन्दर्य**

थोरै दिन के कारणे, कौन उपाधि करै

किस जीवन के वास्ते, जग में पचि-पचि मरै

जग में पचि-पचि मरै, आपनी इज्जत खोवै

एक गमावै हुरमत, द्वितीय फजीहत होवै

कह गिरिधर कविराय, जु जीवन मुक्ती लोरै

तजै सर्व का संग, जान रहना दिन थोरैं।